बैतूल जिला एक परिचय

भारत की हृदय स्थली में स्थित बैतूल जिला पवित्र ताप्ती नदी के उद्‌गम स्थल का गौरव प्राप्त किये हुये हैं । दिल्ली मद्रास मुख्य लाईन पर भोपाल नागपुर के मध्य में स्थित है । अकबर महान के नौ रत्नों में से एक रत्न टोडरमल के द्वारा कराये गये सर्वेक्षण से ज्ञात अखंड भारत के केन्द्र बिन्दु पर बसा यह जिला आदिवासी संस्कृति को उद्‌घाटित करता है ।

भौगोलिक स्थितिः–

आदिवासी बाहुल्य जिला बैतूल के दक्षिण में सतपुडा की श्रृंखलाओं में फैला हुआ है । उत्तर में नर्मदा की घाटी और दक्षिण में बरार का मैदान है । यह जिला 21'' 22′ से 22'' 23′ उत्तरी अक्षांश एवं 77''–10′ से 78''–33 देशांश के मध्य स्थित है । इसके उत्तर में होशंगाबाद जिला, दक्षिण में महाराष्ट् प्रदेश का अमरावती जिला, पूर्व में छिंदवाडा जिला और पश्चिम में पूर्व निमाड (खंडवा) जिला है ।

पर्वत श्रृंखलाः–

बैतूल जिला सतपुडा की पर्वत श्रृखंलाओं में समुद्र सतह से 365 मीटर और इससे अधिक उंचाई पर बसा हुआ है । पर्वत श्रृंखला पूर्व की ओर अधिक उंची है । जो पश्चिम की ओर कम होती जाती है । औसत उंचाई 653 मीटर उंची है । चार भागों में विभाजित श्रृंखलाएं –(1) सतपुडा पर्वत श्रृंखला (2) तवा मोरण्ड घाटी (3) सतपुडा पठार के बीच में (4) ताप्ती की घाटी है ।

सतपुडा पर्वत श्रृंखला के दोनों ओर तवा और नर्मदा स्थित है । श्रृंखला में कई उंची चोटियां हैं । जिनमें सबसे उंची चोटि पूर्व में किलनदेव 1107 मीटर है । चोटियों पर ही पुराने किले बने थे । जो पूरे क्षेत्र में प्रशासन के लिये उपयोगी थे । तवा घाटी समुद्र सतह से 396 मीटर उंचाई पर है । घाटी का अधिक भाग कीमती वृक्षों (प्रमुख सागौन) से ढका हुआ है और किनारे की भूमि उपजाउ है ।

सतपुडा का पठार, जिले के पूर्वी भाग में उंची–उंची चोटियां उत्तर तक फैली है । इसमें सबसे उंचा पठार 685 मीटर चौडी पट्‌टी के रूप में फैला है । मुलताई तहसील 791 मीटर, भैंसदेही तहसील के खामला ग्राम के पश्चिम की ओर सबसे उंची चोटी 1137 मीटर है जो प्रदेश की पचमढी के बाद दूसरी उंची चोटी है ताप्ती घाटी 15 मी लंबी और 20 मीटर चौडी पट्‌टिका के रूप में है, जो दामजीपुरा तक फैली है ।

नदियांः–

जिले की प्रमुख नदियों में से ताप्ती, तवा, माचना, वर्धा, बेल, मोरण्ड एवं पूर्णा आदि है । ताप्ती दक्षिण की प्रमुख नदियों में से एक, जो पुराणों के अनुसार सूर्य पुत्री कहलाई है । इसका उद्‌गम मुलतापी (मुलताई) में स्थित तालाब से माना जाता है । वस्तुतः यह मुलताई के उत्तर में सतपुडा के पठार से 790 मीटर उंचाई से 21''48′ उत्तर से 78''15′ पूर्व से निकली है, जो गुजरात प्रदेश के सूरत जिले से होती हुई अरब सागर में जा मिलती है । इसकी कुल लंबाई 701. 6 किलोमीटर है ।

तवा नदी जिले के उत्तर पूर्व से प्रवेश करती है, जो छिंदवाडा जिले से निकली है । इसमें आगे माचना नदी मिल जाती है । जो ढोढरामोहार के आगे होशंगाबाद जिले में प्रवेश करती है । जिस पर रानीपुर के पास बहुउद्‌देशीय वृहद परियोजना (तवा बांध) का निर्माण किया गया है । जिले के सारनी ग्राम में स्थित सतपुडा थर्मल पावर स्टेशन के उपयोग हेतु बांध बनाया गया है ।

वर्धा नदी मुलताई तहसील के उत्तर पूर्व से निकलकर 35 किलोमीटर की दूरी पार कर महाराष्ट्र प्रदेश में प्रवेश करती है । जो आगे चलकर चंद्रपुर जिले के वेनगंगा नदी में मिल जाती है । (467 किलोमीटर) माचना नदी जिले के पूर्व से निकलकर उत्तर की ओर बैतूल

उत्तरी सीमा पर बहती है, और ढोढरामोहार के पास तवा नदी में मिल जाती है । जिसकी कुली लंबाई 185 किलोमीटर है ।

वर्षा और तापमानः–

जिले की जलवायु सम, नम, सुखद एवं स्वास्थ्य वर्धक है । निम्न तापमान 3'' से और अधिकतम 40'' से के बीच रहता है । मई माह अतयधिक तापमान का महिना है जिले की औसत वर्षा 1546.03 मिली है । किन्तु इस वर्ष औसत वर्षा 953.7 मिली ही हुई है ं।

खनिज संपदाः–

प्रमुख खनिज के रूप में एक मात्र कोयला और पाथाखेडा से प्राप्त होता है , जहां पाथाखेडा में 8 खदाने कार्यरत है । इनका उपयोग सतपुडा थर्मल पॉवर स्टेशन में विद्युत उत्पादन हेतु किया जाता है । वार्षिक उत्पादन 2928395 मिट्रिक टन, जिसका मूल्य 23461.66 लाख रूपये है ं। विगत 5 वर्षों से उत्पादन में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है । इससे यहां के कुशल और अकुशल श्रमिकों को रोजगार उपलब्ध है ।

जिले पर ऐतिहासिक दृष्टिः–

130–161 ईसा पूर्व (ए.डी.) के समय ताप्ती नदी का क्षेत्र गोंड राजा, कोण्डाली के कब्जे में रहा । बदनूर से 4 मील पूर्व में स्थित खेडला पर जयपाल का शासन था । खेडला काफी लंबे समय तक महत्वपूर्ण प्रशासनिक केन्द्र रहा । मुल्क राजा स्वामी रचित ''विवेक सिंधु'' से ज्ञात होता है ं। 1398 ईसा पूर्व (ए.डी.) में नरसिंगराय का शासन था । अकबर के शासनकाल में सन् 1560 के पश्चात् खेडला जिले का प्रमुख केन्द्र रहा, जिसमें छिंदवाडा का दक्षिणी भाग शामिल था । पश्चात् सन् 1743 में रघुजी भोंसले राज्य के अंतर्गत गोंड राजा ईल को सहायक नियुक्त किया गया । मुख्यालय बैतूल बाजार किया गया सीतावालदी युद्ध के बाद सन् 1818 में नागपुर संघ में मिलाया गया । 1826 में ब्रिटिश संघ में मिला दिया गया ।

सन् 1822 में डिप्टी कमिश्नर ने बैतूल बाजार से बदनूर जिला प्रशासनिक केन्द्र स्थानांतरित कर अपना निवास बना लिया । यही से सभी प्रकार का पत्र व्यवहार होने लगा । पश्चात् मुख्यालय बैतूल के रूप में जाना जाने लगा । प्रशासनिक इकाई में 1931 तक परिवर्तन होते रहे जिसमें नरसिंगपुर और छिंदवाडा प्रभावित होते रहे । परन्तु बदनूर प्रत्येक समय प्रशासनिक केन्द्र बना रहा । 1 नवम्बर 1948 को मध्यप्रदेश से कमिश्नर डिवीजन समाप्त कर दिया गया । जो नये मध्यप्रदेश के निर्माण तक भोपाल कमिश्नर के अंतर्गत रहा ।

वर्तमान परिवेश मेंः–

जिले का क्षेत्रफल 1991 की जनगणना के अनुसार 10043 वर्ग किमी. है । संपूर्ण जिला 5 तहसील, 5 टप्पा तहसील एवं 10 विकासखंडों में विभाजित है जिसमें 7 आदिवासी विकास खंड एवं 3 सामुदायिक विकासखंड प्रशासनिक नियंत्रण की दृष्टि से 1236 राजस्व ग्राम एवं 78 वीरान ग्राम है । जिला मंडल 262 पटवारी हल्के और 16 आरक्षी केन्द्र है ।

जनांकीकिय स्वरूपः–

स्वतंत्रता के पश्चात् जनसंख्या में व्यापक परिवर्तन हुये । सन् 1961–71 में वृद्धि दर 31.3 प्रतिशत थी, 1971–81 में कम होकर 25.69 प्रतिशत हो गई । वही 1981–91 में बढकर 26.67 प्रतिशत हो गई तथा वर्ष 1991–2001 में घटकर 18.02 प्रतिशत हो गई । अनुसूचित जाति जनजाति की जनसंख्या 1981 में 36.19 प्रतिशत रही, वही 1991 में 37.51 प्रतिशत हो गई । विभिन्न दशकों में नजसंख्या के घनत्व में वृद्धि हुई है । 1861 में प्रतिवर्ग किमी. पर 56 व्यक्ति थे, वहीं 1991 में बढकर 118 व्यक्ति एवं 2001 में बढकर 139 हो गए । किसी भी समाज में पुरूषों एवं महिलाओं का अनुपात उस समाज में महिलाओं की प्रभावशीलता को स्पष्ट करता है । सन् 1991 में प्रति हजार पुरूषों के पीछे 966 महिलाएणं थी, वहीं 2001 में घटकर 965 रह गई ।

सन् 1965 से 1995 तक जन्म एवं मृत्यु दर में व्यापक परिवर्तन हुए । जन्मदर सन् 1965 में 38.64 प्रतिहजार थी, वहीं सन् 1991 में घटकर 22.45 रह गई । इसी प्रकार मृत्यु दर सन् 1965 में जहां 14.66 प्रति हजार थी, वहीं सन् 1995 में घटकर 6.96 हो गई । मृत्युदर में कमी का कारण चिकित्सा सुविधा, शिक्षा का प्रसार एवं यातयात के साधनों का विकास रहा । वही जन्म दर में कमी का कारण सामाजिक, सांस्कुतिक एवं कृषि अर्थव्यवस्था रहे ।

अंतः संरचनाः–

उर्जा विकास का महत्वपूर्ण साधन है । प्रमुख स्त्रोत विद्युत है जो मानव जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक है । बैतूल जिले के सारणी में स्थापित सतपुडा ताप विद्युत गृह का 50 प्रतिशत खपत प्रदेश में होता है । उत्पादन 6 अक्टूबर 1967 को प्रारंभ हुआ । वर्तमान में कुल वार्षिक क्षमता एन.ए. मेगावाट का उत्पादन हो रहा है, जिसमें उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है । जिले के 1320 ग्राम विद्युतिकरण है एवं 34666 कनेक्शन सिंचाई हेतु मोटर पंप एवं नलकुप को प्रदान किये गये हैं ।

सिंचाई का प्रमुख स्त्रोत कुंआ है, उसके पश्चात् नहर हैं । सिंचाई एवं उत्पादन के क्षेत्र में उत्तरोत्तर वृद्धि परलिक्षित होती है । परिवहन एवं संचार के विकास में महत्वपूर्ण योगदार है । जिले में 20 रेल्वे स्टेशन, 218 डाकघर जिसमें 1 प्रधान डाकघर एवं 3 उपडाकघर है । 19 ऐसे डाकघर है जो तारघर का कार्य करते हैं । दूरभाष में कोई उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है । एक आकाशवाणी केन्द्र एवं दूरदर्शन प्रक्षेपण केन्द्र है । स्वास्थ्य सेवाओं में कोई वृद्धि नहीं हुई है ।

आज सुदूर ग्रामों तक स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की जाती है । शैक्षणिक संस्थाओं की संख्या में कम वृद्धि हुई है । शासकीय संस्थाओं की तुलना में निजी संस्थाएं कुकरमुत्तों के समान फैल गयी है । जिले में कोई भी सार्वजनिक उपक्रम नहीं है । राष्ट्रीय महतव के 2 संस्थान ताप विद्युत गृह सारणी एवं वेस्टर्न कोल फील्ड पाथाखेडा में स्थापित है ।

मध्यम उद्योगों के अन्तर्गत एम.पी.विनीयर एंड प्लायवुड कोसमी, वियरवेल टायर फेक्ट्री पंखा, बैतूल टायर्स एंड ट्यूब्स सांपना,/ मध्यावर्त एक्स. आईल इंडस्ट्रयल, कोसमी एवं आदिश्वर आईल एंड फलोर मिल मुलताई में स्थापित है । उद्योग केन्द्र के माध्यम से 211 लघु कुटीर उद्योग में रूपये 131.15 लाख का निवेश हुआ एवं एन.ए. व्यक्ति रोजगार में लगे ।

उपरोक्त बैतूल जिला एक परिचय विभिन्न परिवेश में सटीक चित्रण प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है ताकि आप जिले की जानकारी से अवगत हो सके ।

———————————